कौन भूल सकता है ऐसी प्यारी दादी जी को

कौन भूल सकता है ऐसी प्यारी प्रकाशमणि दादी जी को जो थीं प्रकाश-पुँज, प्रभु-प्रेम का कुँज, जो सभी को करती थीं सदा खुश, देती थीं अलौकिक सुख, हरती थीं जन-जन का दु:ख। माँ जगदम्बा के समान पूज्यनीया, ब्रह्मा बाबा के समान विशाल दिल, उदारचित्त, प्रेम, करुणा की मूर्ति, लाखों मानव आत्माओं की आधारमूर्त, त्याग-तपस्या-सेवा के द्वारा प्रभु को प्रत्यक्ष करने वाली प्यारी आदरणीया दादी जी को कौन भूल सकता है? प्रभु के स्नेह सागर में डुबो कर अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव करा कर फ़रिश्ता स्वरूप बनाने वाली मीठी-मीठी दादी जी को कौन भूल सकता है? माँ समान ममता की मूरत, बाप समान क्षमता की सूरत वाली, शिक्षक बन ईश्वरीय शिक्षाओं से सही राह दिखाकर नि:स्वार्थ भावनाओं से आगे बढ़ाने वाली, अलौकिक ज्ञान के संग के रंग से जीवन का परिवर्तन करने वाली दादी जी थीं।

वाह-वाह की मिठाई खिलाकर, सृष्टि नाटक का गुह्य रहस्य बताकर, स्थिति को उपराम बनाने की शिक्षा देने वाली योगनिष्ठ, तत्वचिंतक बनकर प्रभु की समीपता का अनुभव कर्मों द्वारा कराने वाली, देह, देह के सम्बन्ध, देह की दुनिया से ममत्व मिटाकर देवताई स्वरूप में स्थित करने वाली, कर्मों की

गुह्य गति का राज़ समझा कर पुरानी कलियुगी दुनिया से दूर ले जाकर, नई आने वाली सतयुगी दुनिया का दर्शन सहज ज्ञान द्वारा कराने वाली महान पवित्र स्वरूप आदरणीया दादी जी को कौन भूल सकता है? दादी जी में ईश्वरीय शक्तियों की पराकाष्ठा थी। वे सदा दिव्यगुणों से सजी हुई थीं। मीठी दादी जी का कुशल प्रशासन देश-विदेश के विद्वानों, आचार्यों, संतों, महंतों तथा अन्य सभी को सत्यता, नैतिकता, पवित्रता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। दादी जी की दृष्टि में पूरी सृष्टि को बदलने की ताकत दिखाई देती थी, उसी शक्तिशाली दृष्टि ने लाखों लोगों के जीवन का परिवर्तन किया भी। ऐसी आध्यात्मिक वीरांगना प्रिय दादी जी को कौन भूल सकता है?

सदा निर्मोही, निर्विकल्प समाधि में विराजमान, निर्मल वाणी द्वारा सर्व के मनों को शीतल बनाने वाली, माया की अग्नि को योग शक्ति द्वारा बुझाकर, पाँच विकारों रूपी ज़हरीले साँपों के विष से छुड़ा कर, ईश्वरीय मधुर महावाक्यों का अमृतपान करा कर, हर मानव को पतित से पावन बनाने वाली, साक्षात् दिव्यमूर्ति आदरणीया दादी जी को कौन भूल सकता है? स्वयं को सदा निमित्त समझ कर प्रभु की शिक्षाओं का आदर्श प्रत्यक्ष करके दिखाया, निर्माणता के गुण से स्वमान में रह जीना सिखाया, छोटे-बड़े सभी को सम्मान देकर अद्वितीय कर्त्तव्य से पालना की। मातृत्वभाव से हर आत्मा को प्रभु के गले का हार बनाने का कार्य किया। सूक्ष्म सकाश देकर शिव बाबा के ज्ञान के प्रकाश के समीप लाकर अनहद प्रेम की किरणों में सभी को समा दिया। ऐसी प्यारी प्रकाशमणि दादी जी को कौन भूल सकता है?

दादी जी का जीवन एक खुली किताब के समान था, जिसमें ऊँचाई-निचाई के भेदभाव का आरोह-अवरोह नहीं था। ईश्वरीय आनन्द का संगीत सदैव मीठी दादी जी के हृदय में बजता था। मन-बुद्धि के विचारों की एक-एक तार में सदा यही आवाज़ गूँजती थीं – मेरा बाबा, मेरा बाबा। दादी जी के एक-एक श्वास में शिव बाबा की शिक्षाओं का वाद्य गूँजता था तथा ईश्वरीय याद का नाद तानपूरे की तरह बजता था। मानव सेवा के घुँघरू सभी को सर्व प्रकार की सेवा करने का उमंग-उत्साह देते थे, जिससे दिल नाच उठता था, फूलों की तरह खिल जाता था। मीठी दादी! दादी! आपको हम कैसे भुला सकते हैं?

आप हम सभी बच्चों की, माँ-बाप के समान पालना करने वाली, यज्ञ की भाग्यज्योत जगाने वाली, हर बच्चे को व्यक्त भाव, पुराने स्वभाव-संस्कार से बचाने वाली, अखुट ज्ञान की भण्डार, प्रभु की दिलतख्तनशीन, ब्राह्मण बच्चों की प्रेरणामूर्त, विश्वजीत, मायाजीत, प्रकृतिजीत, विकर्माजीत, कर्मातीत मूर्त थीं। ऐसी प्रकाश-स्तम्भ के समान सदा प्रकाश देने वाली आदरणीया, माननीया, प्यारी, मीठी दादी जी को कौन भूल सकता है? आप अभी भी हमें अहसास करवा रही हो कि आप हमारे साथ-साथ हो और साथ ही रहेंगी। ऐसी वरदानीमूर्त, सभी पर दुआओं की बरसात बरसाने वाली, शक्तिस्वरूप माँ को शत्शत् प्रणाम!

❑❑

दादी जैसा कोई नहीं

– ब्रह्माकुमार हर्षित, गाँव भूनी

बात बहुत पुरानी भी नहीं है। मेरी उम्र साढ़े दस वर्ष है। कई बार मधुबन आया हूँ। मेरे लौकिक परिवार में सभी, भगवान के स्नेही बच्चे हैं, एकदम पक्के स्नेही बच्चे। घर में 30 वर्ष पुरानी गीता पाठशाला है। ईश्वरीय ज्ञान के बड़े-बड़े महारथी इस घर में आ चुके हैं। मम्मी-पापा व दादा-दादी जी को छोड़कर सभी कुमार व कुमारी हैं। चार बुआ, चार आश्रमों की समर्पित शिक्षिकाएँ हैं। मैं और मेरा छोटा भाई पुलकित रोज मुरली सुनते हैं। हमें रोज अच्छे-अच्छे अनुभव होते हैं। मैं कक्षा 7 में आ गया हूँ। पढ़ाई में बाबा का सहयोग ऐसा रहा कि एक साल में दो कक्षाएँ पास हो गई हैं। मैंने प्रधानाध्यापक को भी बाबा की पहचान कराई है, वे विशेष सम्मान हमें देते हैं। बड़ी दादी जी व सभी दादियों का भरपूर प्यार पाया है। बड़ी बहनों की मीटिंग में, बच्चों के कार्यक्रम में, एकाउण्ट मीटिंग में, बाबा मिलन में, हर वर्ष मैं मधुबन आया हूँ। मुझे बुआ लेकर आती रही हैं। कई बार मेरे कारण उन्हें सुनना भी पड़ा कि बच्चे को क्यों लाई हो, क्योंकि मैं बहनों के कमरे में ही रहता था। अकेला रह भी नहीं सकता था। पूरे मधुबन में कभी-कभी मैं अकेला बच्चा होता था। बड़ी दादी के हाथों से बहुत बार टोली खाई, सौगात पाई। जब-जब मैं दादी जी से मिलता, वे उतना ही प्यार मुझे भी करती जितना कि अन्य सभी को करती थीं। कोई मुझे दादी के सामने से हटा भी देता तो दादी उसे डाँट देती थीं। आप जानते हैं, बच्चों के लिए इतना महत्त्व हरेक को नहीं होता है। मैंने कई बार अपने हाथ से बड़ी दादी व गुलजार दादी की साड़ी पकड़ी। तब मैं चार साल का था। कभी भी दादी जी ने मेरा हाथ हटाया नहीं, और ही मुझसे बातें की। आज वे बातें मुझे बहुत याद आती हैं। दादी जी जैसा तो सारी दुनिया में कोई भी नहीं।

मैं बड़ा भाग्यवान हूँ जो इतनी पालना पाई। मेरे पास दादी जी के दिये हुए गेम व कई बैग हैं। एक बार मैं बड़ी बहनों के बीच रो पड़ा। छोटा था, रोने का कारण बस इतना था कि मुझे रजाई क्यों नहीं मिली। पाण्डव भवन के हिस्ट्री हॉल में बहनों को दादी जी ने आम और रजाई सौगात दी थी। मुझे टोली और बैग मिला। मेरे आँसू आ गए, फिर तो कई बहनों ने अपनी सौगात मुझे देनी चाही, मैंने वो तो नहीं ली पर जब दादी जी को पता चला तो मुझे बुलाकर वही सौगात अर्थात् आम की थैली और रजाई देकर उन्होंने मेरे बहते आँसू रोक दिये। वे आँसू तो अज्ञानता के थे, अब दिल करता है सचमुच आँसू बहाने को। इतना बड़ा दिल दादी माँ का था। मैं उस प्यार का पल-पल ऋण चुकाना चाहता हूँ। सदा लेता ही रहा, जब देने लायक होने लगा तो साथ बिछुड़ गया। मैं अपनी प्यारी दादी माँ के प्यार का प्रकाश सारी दुनिया में फैलाऊँगा। प्रकाशमणि दादी जैसा संसार में कोई नहीं; यह सारी दुनिया को बताऊँगा।

इतनी बड़ी दादी हमसे झुक कर बातें करती थीं। मैं बड़ा होकर सबको झुकाऊँगा उस प्यारी दादी के तपोस्थल पर जहाँ वे सदा के लिए जागती ज्योति बन प्रकाश स्तम्भ बन गई हैं। मेरी श्रद्धांजलि स्वीकार कीजिए दादी माँ! ❑❑